Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 2 (February 2022) pp: 41-45
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

तराईन के द्वितीय युद्ध (1192 ई०) से मामलुक वंश तक हरियाणा में बाह्य आक्रमण

डॉ. शत्रुजीत सिंह

इतिहास विभाग

राजकीय कन्या महाविद्यालय रानियां

1192 ई. के तराईन युद्ध के बाद हरियाणा में लगभग चाहमान शासन समाप्त हो गया। अजमेर पर तुर्कों का अधिकार हो गया। कुतुबुद्दीन ऐबक, जो मोहम्मद गौरी का सेनानायक था, वह दिल्ली पर अपनी विजय प्राप्त करना चाहता था। 1193 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली के दुर्ग पर अपना घेरा डाल दिया। दो माह की घेराबन्दी करने के पश्चात् दिल्ली के राजपूतों ने दुर्ग को खाली कर दिया।' इस प्रकार दिल्ली पर तुर्कों का अधिकार हो गया। इस समय उतरी भारत में एक कन्नौज राज्य ही स्वतन्त्र था। यहाँ जयचन्द गहड़वाल का शासन था। 1194 ई. में मोहम्मद गौरी ने जयचन्द को पराजित करने के लिए कन्नौज पर आक्रमण कर दिया। जयचन्द एवं मोहम्मद गौरी के मध्य चन्दावर नामक स्थान पर भीषण युद्ध हुआ। आरंभ में तो जयचन्द का पलड़ा भारी था, परंतु दुर्भाग्य से जयचन्द को आँख में तीर लगने से जयचन्द हाथी से गिर पड़ा तथा मारा गया। इस तरह गौरी ने जयचन्द को पराजित करके कन्नौज पर अधिकार कर लिया। 1195-96 ई. में गौरी ने बयाना एवं ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। 1203 ई. तक कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में तुर्की साम्राज्य का विस्तार किया। इस समय गौरी मध्य एशिया के तुर्कों से संघर्ष कर रहा था। इस समय में कुतुबुद्दीन ऐबक ने अन्हिलवाड़ा (गुजरात) के चालुक्यों, बुन्देलखण्ड, बंगाल, बिहार आदि राज्यों को अपने अधीन किया। 1203 ई. में मोहम्मद गौरी की मध्य एशिया में पराजय हई। इससे प्रभावित होकर पंजाब में खोक्खरों ने विद्रोह कर दिया। इनका दमन करने के लिए मोहम्मद गौरी को पंजाब पर आक्रमण करना पड़ा। मोहम्मद गौरी ने ऐबक को भी यह सन्देश भेजा कि वह उसे झेलम नदी के निकट मिले। इस तरह ऐबक एंव गौरी की संयुक्त सेना ने खोक्खरों के विद्रोह को दबा दिया। जे.एल. मेहता के अनुसार "गजनी के लिए अपनी वापसी यात्रा में उसने सिन्धु नदी के तट पर धमयक (झेलम) में अपना शिविर लगाया। दुःसाहसी खोक्खरों के एक दल ने चुपचाप उसके शिविर में प्रवेश किया और 15 मार्च, 1206 ई. को उसकी हत्या कर दी"।

मोहम्मद गौरी की मृत्यु के पश्चात् गौर के सिहासन पर उसके भतीजे ग्यिासुद्दीन ने अधिकार कर लिया, क्योंकि मोहम्मद गौरी निःसन्तान था। इसके अतिरिक्त मोहम्मद गौरी के साम्राज्य को उसके शक्तिशाली सूबेदारों एवं अमीरों ने बाँट लिया। अफगानिस्तान से लेकर ऊपरी सिन्ध तक का क्षेत्र ताजुद्दीन यल्दौज के अधीन था। उच्छ एवं मुल्तान का क्षेत्र नासिरूद्दीन कुबाचा के अधिकार में आ गया। कुतुबुद्दीन ऐबक के अधिकार में लगभग उत्तरी भारत का क्षेत्र था। ऐबक ने लाहौर में अपने-आपको भारत का सुल्तान घोषित करके तुर्की राज्य की नींव डाली। इसके पश्चात् सेनानायकों, गजनी के सुल्तान एवं अमीरों ने उसे सुल्तान मान लिया। इस प्रकार कुतुबुद्दीन ऐबक ने भारत में मुस्लिम राजवंश की स्थापना की,

जिसे भारतीय इतिहास में मामलुक वंश,'गुलामवंश' या 'दासवंश' कहते हैं। इस वंश के शासकों ने 1290 ई. तक भारत में शासन किया।'

मामलुक वंश:-

भारत में जिन तुर्क शासकों ने दिल्ली पर शासन किया उसे 'दिल्ली सल्तनत' के नाम से जाना जाता है। सबसे पहले कतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली पर अधिकार करके भारत में 'दास वंश' या मामलुक वंश की नींव डाली। वर्तमान हरियाणा भी ऐबक के अधीन आ गया। इस समय ऐबक की अनेक समस्याएँ थी। ग्वालियर, जो ऐबक के अधीन था, उसे प्रतिहार राजपूतों ने पुनः जीत लिया। कॉलिजर के चन्देल शासक ने तुर्कों को दक्षिण में बढ़ने से रोका। इसके अतिरिक्त कुतुबुद्दीन ऐबक को ताजुद्दीन यज्दौज एवं नसिरूद्दीन कुबाचा के आक्रमण का भय था। इस तरह से ऐबक को साम्राज्य विस्तार के लिए अवसर प्राप्त नहीं हुआ। राजपूतों ने उसके साम्राज्य के कुछ क्षेत्रों पर अधिकार भी कर लिया। एल.पी. शर्मा के अनुसार "चौगान (आधुनिक पोलों की भाँति एक खेल) के खेल में घोड़े से गिर जाने के कारण 1210 ई. में उसकी मृत्यु हो गई। उसे लाहौर में दफनाया गया और उसकी कब्र पर एक साधारण स्मारक बना दिया गया।"

कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के पश्चात् उसके राज्य के अमीरों एवं सरदारों ने उसके पुत्र आरामशाह को सिंहासन पर बिठाया। इस समय नसिरुद्दीन कुबाचा ने उच्छ एवं मुल्तान पर अपना अधिकार कर लिया। इस अव्यवस्था को देखते हुए राज्य के अमीरों एवं सरदारों ने बदायूँ के गवर्नर इल्तुतमिश को दिल्ली के सिंहासन पर बिठाया। आरामशाह ने इसका विरोध किया, परंतु उसका दमन कर दिया गया।" इस प्रकार इल्तुतमिश ने आरामशाह को पराजित करके 1211 ई. में सिंहासन पर बैठा। इस समय इल्तुतमिश के सामने अनेक समस्याएं थी। कालिंजर, ग्वालियर, जालौर, रणथम्भौर आदि राज्य दिल्ली सल्तनत के शत्रु थे। हरियाणा में अहीरों, जाटों, मेवों आदि ने दिल्ली सल्तनत के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह के कारण हरियाणा में बड़ा आतंक फैल गया। इल्तुतमिश ने इस विद्रोह को दबा दिया एवं शान्ति कायम की। इल्तुतमिश को अपने साम्राज्य के उतरी-पश्चिमी सीमा से मंगोल आक्रमण की संभावना थी। इस समय दिल्ली एवं उसके आस-पास के प्रदेशों पर इल्तुतमिश का अधिकार था। लखनौती पर खिलजी मलिकों, लाहौर पर नसिरूद्दीन कुबाचा तथा गजनी पर ताजुद्दीन यल्दौज का अधिकार था।

ताजुद्दीन यल्दौज का आक्रमणः-

इल्तुतमिश के शासनकाल के दौरान गजनी का शासक ताजुद्दीन यल्दौज था।

उसने लाहौर पर आक्रमण करके वहां के शासक नासिरूद्दीन कुबाचा को पराजित कर दिया। इसके पश्चात् यज्दौज दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा। उसने पंजाब पर आक्रमण करके वहाँ खूब लूटमार की। इल्तुतमिश को जब उसके आक्रमण का पता चला तो वह उसे रोकने के लिए आगे बढ़ा। इस प्रकार इन दोनों शासकों की सेनाओं में 25 जनवरी, 1216 ई. को तरावडी (हरियाणा) के स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में इल्तुतमिश ने यल्दौज को पराजित कर दिया।

इस विजय के साथ ही दिल्ली पर इल्तुतमिश का अधिकार सुरक्षित हो गया।

इल्तुतमिश में दिल्ली सल्तनत पर 1236 ई. तक शासन किया।

इल्तुतमिश ने हरियाणा प्रदेश की प्रशासनिक व्यवस्था को चलाने के लिए उसे इक्तों में बांटा। इन इक्तों के प्रशासन को चलाने के लिए इल्तुतमिश ने कई अमीरों एवं सरदारों को नियुक्त किया। के.सी. यादव के अनुसार "ये इक्ते दिल्ली, हाँसी, सिरसा, (सुरसती), पिपली, सरहिन्द, रेवाड़ी, नारनौल और पलवल थे। हाँसी का इक्ता सैनिक एवं आर्थिक महत्व के कारण काफी अहमियत रखता था।" यह खास-खास सरदारों को दिया जाता था। रेवाड़ी, पिपली एवं सरहिन्द इक्तों का सामरिक एवं व्यापारिक महत्व था। पलवल इक्ता सबसे छोटा था।"

इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद रूकनुद्दीन फिरोज दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।

वह एक अयोग्य एवं विलासी शासक था। इस कारण अमीर एवं प्रान्तीय इक्तादार उससे असन्तुष्ट थे, इसलिए उन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में विद्रोह करने आरंभ कर दिए। हरियाणा में हाँसी के सुबेदार मलिकं सैफुद्दीन ने विद्रोह कर दिया। बदायूँ, लाहौर, हाँसी, मुल्तान आदि के इक्तादारों ने मिलकर एक संयुक्त सेना के साथ दिल्ली की ओर कूच किया। इन्होंने मिलकर फिरोज की माँ को कैद कर लिया तथा फिरोज के स्थान पर इल्तुतमिश की पुत्री रजिया को सुल्तान बना दिया। इन्होंने फिरोज को बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया, जहां 1236 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।

1236 ई. में रजिया दिल्ली की सुल्तान बनी। रजिया को दिल्ली की जनता का विश्वास प्राप्त था। इस कारण इक्तादारों एवं अमीरों की उपेक्षा होने लगी। इसी उपेक्षा के कारण उन्होंने रजिया के विरूद्ध षड्यन्त्र रचने आरंभ कर दिए। इनमें प्रमुख फिरोज का वजीर निजामुल मोहम्मद जुनैदी था। जुनैदी ने हाँसी, लाहौर, बदायूँ आदि के इक्तादारों का सहयोग प्राप्त कर रजिया की राजधानी पर घेरा डाल दिया। रजिया सुल्तान को जब इसका पता लगा तो उसने कूटनीति का सहारा लेकर बदायूं एवं मुल्तान के सूबेदारों को अपने साथ मिला लिया। इसके पश्चात् रजिया ने कुछ सुबेदारों को बन्दी बना लिया एवं कुछ को मार डाला' इस प्रकार रजिया ने विद्रोहियों को दबा दिया। मिनहाज-उस-सिराज के अनुसार लखनौती से देवल तक समस्त मलिकों एवं अमीरों ने उसकी सत्ता स्वीकार कर ली।" इसके पश्चात् रजिया ने रणथम्भौर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इस दुर्ग पर इल्तुतमिश की मृत्यु के समय चौहानों ने अधिकार कर लिया था। दिल्ली के अमीरों, सरदारों एवं इक्तादारों ने अब भी रजिया के विरूद्ध षड्यन्त्र रचने बन्द नहीं किए। एक बार फिर दिल्ली के तुर्क सरदारों ने मीर हाबिज के नेतृत्व में षड्यन्त्र रचने आरंभ कर दिये। उन्होंने भठिण्डा के सूबेदार अल्तुनिया को भी अपनी ओर मिला लिया। इस षड्यन्त्र की योजनानुसार अल्त्निया ने रजिया सुल्तान को बन्दी बना लिया। इसके बाद रजिया ने कटनीति का सहारा लेकर अल्तत्निया से विवाह कर लिया। इस दौरान षड्यन्त्रकारियों ने बहराम को दिल्ली के सिंहासन पर बिठा दिया। अल्तुनिया एवं रजिया ने फिर से दिल्ली पर अधिकार करने के लिए सेना एकत्रित की, परंतु उन्हें पराजित होना पड़ा। इस समय हरियाणा में कैथल राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण केन्द्र था। जब रजिया एवं अल्तुनिया पराजित होकर यहां आए तो यहां के हिन्दुओं ने 13 नवम्बर, 1240 में उन दोनों की हत्या कर दी। ऐसा भी माना जाता है कि रजिया एवं अल्तुनिया को दिल्ली में ही मार दिया गया था। वर्तमान में कैथल एवं दिल्ली दोनों जगह रजिया की कब्र बनाई गई है । रजिया सुल्तान के पश्चात् बहराम शाह ने दिल्ली पर शासन किया। इसके शासन काल में 1241 ई. में मंगोलों ने तापर के नेतृत्व में भारत पर आक्रमण किया। मुल्तान के गवर्नर कबीर खाँ ने मंगोलों को पराजित कर दिया। मुल्तान में पराजित होने के बाद मंगोलों ने लाहौर पर आक्रमण कर दिया। लाहीर के गवर्नर मलिक करकश के भाग जाने के कारण लाहौर पर मंगोलों ने अधिकार कर लिया। लाहौर में लूटमार करने के बाद वे वापिस चले गए। जे.एल. मेहता के अनुसार "यदि चंगेज खाँ ने 1220-21 ई. में भारत पर आक्रमण करने का निर्णय किया होता तो दिल्ली की अवयस्क तुर्की सल्तनत का पतन हो जाता एवं वह सदैव के लिए विलुप्त हो जाती।" बहराम के छोटे से शासन काल के बाद मसूदशाह (1242-46) दिल्ली का शासक बना। इन दोनों के शासन

काल में 'चालीसा' दल का प्रभुत्व था, जो इल्तुतमिश ने संगठित किया था। इस 'चालीसा' दल ने जून, 1246 ई. में मसूदशाह को दिल्ली के सिंहासन से हटाकर नासिरूद्दीन महमूद को दिल्ली के सिंहासन पर बिठा दिया।

नासिरूद्दीन महमूद ने 1246 ई. से 1266 ई. तक शासन किया। इसके काल में राज्य के अमीरों एवं सरदारों में एकता रही, जिसके कारण कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई।" नासिरूद्दीन महमूद का मन्त्री उलुग खाँ (बलवन) उसके समस्त राजनीतिक कार्यों में उसकी सहायता करता था। इसके शासनकाल में उसने पंजाब में खोक्खरों एवं मंगोलों के विरूद्ध सैन्य अभियान किया। जब वह सिन्धु नदी के तट पर पहुंचा तो मंगोल देश छोड़कर भाग गए। 1256 ई. में इमामुद्दीन रैहन ने अवध के सूबेदार कुतलुग खाँ के साथ मिलकर बदायूँ में विद्रोह कर दिया । समय चारों ओर से विद्रोह होने लगे। बुद्ध प्रकाश के अनुसार "लोगों में व्यापक असन्तोष के कारण चारों ओर विद्रोह की आग भड़क उठी। लोगों ने बयाना, हरियाणा एवं शिवालिक प्रदेश में मुखिया तथा सरदारों की सम्पत्ति लूट ली।" हरियाणा के कैथल जिले में सरदारों तथा मलिकों ने जलालुद्दीन से मिलकर नासिरूद्दीन महमूद के विरूद्ध विद्रोह कर दिया। नासिरूद्दीन महमूद लाहौर आते-जाते समय प्रायः कैथल में रूकता था।

इन विद्रोहों को बलवन ने दबा दिया। 1259-60 ई. में बलवन ने रणथम्भौर के मेवातियों के विरूद्ध सैन्य अभियान किया। बलवन ने यहाँ भीषण रक्तपात किया। फिर भी इनका दमन न किया जा सका। सुल्तान नासिरूद्दीन के आदेश के कारण बलवन ने अपनी गतिविधियों को रोक दिया। 1266 ई. में नासिरूद्दीन महमूद की मृत्यु के बाद बलवन दिल्ली सल्तनत का शासक बन गया।"

जब बलवन के दिल्ली सल्तनत का शासक बना, तब हरियाणा की ... वृद्धि कर दी। नए इक्तों में सोनीपत, बरवाला, कानोंड, कैथल, शिवालिक आदि का स्थान था।" बलवन ने अपने शासनकाल के दौरान 1270 ई. में मंगोल आक्रमण के विरूद्ध सुरक्षात्मक नीति अपनाई। जिन रास्तों से मंगोल भारत पर आक्रमण करते थे. वहां दुर्ग एवं सैनिक छावनियाँ बना दी। उसने मंगोल आक्रमणों से सुरक्षा के लिए जो दुर्ग बनाए, उनमें भठिण्डा, सिरसा, अबोहर, भटनेर (हनुमानगढ़) आदि प्रमुख थे।" बलवन ने अपने साम्राज्य उत्तरी-पश्चिमी सीमा को दो भागों में विभाजित किया। लाहौर का क्षेत्र शहजादा मोहम्मद को एवं समाना तथा उच्छ का क्षेत्र शहजादे बुगराखाँ के अधीन कर दिया। 1285 ई. में समर के नेतृत्व में मंगोलों ने पंजाब पर आक्रमण कर दिया। शहजादा मोहम्मद ने मंगोलों को रोकने के लिए काफी प्रयास किया। वह मंगोल सेना के साथ वीरतापूर्वक युद्ध करता हुआ मारा गया। इसके पश्चात् भी बलवन अपने साम्राज्य की ...

संदर्भ ग्रंथ

1.खन्ना, कैलाश - मध्यकालीन भारत का इतिहास, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस दरियागंज, नई दिल्ली, 2003 ।

2.गोयल, श्री राम -मौखरी-पुष्पभूति-चालुक्ययुगीन अभिलेख, कुसुमान्जलि प्रकाशन, इण्डियन प्रेस, जोधपुर, 1993

3.गुलिया, यशपाल - हरियाणा का रियासती इतिहास, हिन्दी साहित्य अकादमी, पंचकुला, 2005 1

4.जैन, कैलाशचन्द्र-प्राचीन भारत का इतिहास, यूर्निवसिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2004

5.जौहरी, आर०सी०-फिरोज तुगलक, शिव लाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 1968

6.ठाकुर उपेन्द्र एवं महेश कुमार शरण-प्राचीन भारत, चौखम्बा ओरियन्टलिया प्रकाशन, वाराणसी, 1979

7.नागोरी, एस०एल० एवं कान्ता नागोरी -प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक शासक, राज पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर, 2005 1

8.द्विवेदी, राजीव-मध्यकालीन भारत के ऐतिहासिक निबन्ध, अविष्कार पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, 2003

9.देशवाल, सन्तराम-हरियाणाः संस्कृति एवं कला, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला, 2004

10.द्विवेदी, एच०एच०-दिल्ली के तोमर, विद्या मन्दिर प्रकाशन, ग्वालियर, 1969